सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

सृजक-सृजन-समीक्षा

श्रीमती अनिता मंदिलवार

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,
इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**
आवरण: **मृदुल जोशी**
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

श्रीमती अनिता मंदिलवार का परिचय

नाम - श्रीमती अनिता मंदिलवार

पता - संजीव कुमार सिन्हा
जरहागढ़, शिव मंदिर के पास
अंबिकापुर सरगुजा (छ.ग.)

शिक्षा- स्नातकोत्तर (वनस्पति शास्त्र, हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य) बी.एड, पीजीडीसीए

जन्मतिथि - 04 फरवरी

व्यवसाय - व्याख्याता पंचायत
शासकीय हाई स्कूल असोला, अंबिकापुर सरगुजा छ.ग

प्रकाशन विवरण - नवभारत, दैनिक भास्कर, लोकमत, अंबिकावाणी समाचार पत्र में कविताओं लेख का प्रकाशन ।
स्वर मंजरी, सत्य ज्ञान समागम,, व्यंजना में कविताओं का प्रकाशन ।

सम्मान का विवरण - जनपरिषद भोपाल द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ 'लीडिंग लेडीज ऑफ मध्यप्रदेश एण्ड छत्तीसगढ़ vol I. & vol II एवं हू'ज' हू में जीवन परिचय का प्रकाशन।
मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार एवं नवभारत मदर्स डे प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार । नवभारत द्वारा quiz.प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार । दूरदर्शन से प्रसारित 'भवदीय' कार्यक्रम में सर्वश्रेषठ पत्रलेखन का पुरस्कार।

संस्थाओं से संबद्धता - साहित्यिक समिति 'व्यंग्यम' की भूतपूर्व अध्यक्ष ।
वर्तमान में राष्ट्रीय कवि संगम जिला सरगुजा छ.ग. की कार्यकारिणी सदस्य ।

समभाव महिला मंच अंबिकापुर की सदस्य।

काव्य मंच/आकाशवाणी/दूरदर्शन/मंच पर यदि काव्य पाठ का विवरण --

दूरदर्शन रायपुर दवारा कविता पाठ का प्रसारण ।

आकाशवाणी अंबिकापुर से कविता, कहानी, नाटक, रूपक का प्रसारण ।

प्रसारित नाटकों का विवरण --

परिवर्तन, अंतहीन दर्द, मुझे इकरार करना था, मुहब्बत के दीप, एक अजनबी, सज गए दिल के वीराने, कुन्दन, पितृछाया, सुहाग की चूडिया और क्या कमी थी मुझमें (समन्वित नाटक) ।

रूपकों का प्रसारण --या देवी सर्वभूतेषू, आजादी के बाद:- नारी कितनी आजाद एवं माँ।

सरगुजा महोत्सव एवं रामगढ़ महोत्सव (शासकीयआयोजन) में मंचीय काव्य पाठ ।

सम्मान :- काव्य अमृत सम्मान, हिन्दी सागर सम्मान, भाषा सारथी सम्मान, अन्तरा-शब्दशक्ति सम्मान।

आत्म-कथ्य

मेरे विचार से एक स्त्री को इतना सबल होना चाहिए कि हर गलत बातों का विरोध कर सकें । ऐसा संभव हो नहीं पाता क्योंकि उसे जो संस्कार बचपन से दिए जाते हैं तुम त्याग की प्रतिमूर्ति हो, घर की इज्जत हो । ऐसे बहुत सारी बातें जो उसके मन में भर दिए जाते हैं । इन्हीं सब बातों से बस सबको जोड़ते जोड़ते कहीं से वह खुद टूटने लगती है उसे आभास नहीं होता न ही उसके अपनों को । जब उसे आभास होता है बहुत देर हो जाती है, और टूटती जाती है मन दरकने लगता है और रह जाती हैं उसकी खामोशियाँ साथ ही कतरे हुए पंख । जो न उड़ सकते हैं और न ही जुड़ सकते हैं । बस यूँ ही चलता रहता है सिलसिला जीवन का अविराम. !

अनिता मंदिलवार

सृजक का सृजन

ग़ज़ल

चाँद तारे और सूरज को भी ढलते देखा ।
जब वक्त पड़ा मुझपे सबको बदलते देखा ।।

कभी फूलों पर कभी कांटों पर चलके देखा ।
कई इंसान को वक्त. के साथ बदलते देखा ।।

अगर सोचें तो इंसान की हकीकत क्या है ।
वक्त के दर पर हर चेहरे को बदलते देखा ।।

जलते मकानों को देख आगे न आया कोई ।
हमने सबकी जमीर को यहाँ बदलते देखा ।।

शराफ़त कभी नहीं छोड़ी हमने तो 'सपना'।
इस दुनिया में सब कुछ हमने बदलते देखा ।।

ग़ज़ल

संगीत चुराकर झरनों का मस्त पवन गाता है।
दिल की बस्ती में कैसा हलचल हुआ जाता है।।

लहू रोता है यहाँ लेकर जब बहारों का सलाम ।
ख्वाब संवर कर तब हकीकत हुआ जाता है।।

कह दो ये अँधेरों से अब वो होश में आ जाएँ।
चढ़ते हुए सूरज सा अब रंग हुआ जाता है ।।

बढ़ रहा है हिज़्र में यूं लम्हा-लम्हा इज़्तिराब ।
कैफ़ियत दिल की अदाओं से बयाँ हुआ जाता है ।।

जिस मुकाम पर है अब ये जिन्दगी मेरी यहाँ।
जवाँ की हर लफ्ज़ अब बगावत हुआ जाता है ।।

रेत पर ताजमहल अब न बनाओ यहाँ दोस्तों।
अपना था जो अब तक 'सपना' हुआ जाता है।।

दहलीज

उसकी आँखें
जाने कहाँ देखती हैं
अपनी नम आँखों
से निहारती
आकाश का कोना-कोना
जाने क्या सोचती है
उड़ना चाहती है
पर पंख तैयार नहीं
आगे बढ़ना चाहती है
राहें तलाशती हैं
वह तोड़ना चाहती है
परम्पराओं की बेड़िया
थामना है उसे
क्षितिज का छोर
पर क्या पूरी होगी
उसकी आकांक्षाएँ
उसके सपने पूरे होंगे
या दहलीज पर
खड़ी रहेगी
यूँ ही हमेशा
और बाट जोहती रहेगी
मुक्ति के उस द्वार की
जो उसे ले जायेगी
दहलीज के उस पार ....!

याद

मुझे तुम याद आये
हां, तुम
बहुत याद आये,
जैसे उग आये हो
पत्थरों में लाल पलाश
कि बंजर धरती में
खिले हो सूरजमुखी
कि मरूस्थल में
चली हो ठण्डी बयार....
हां तुम,
बहुत याद आये .....
कि पगडंडियों को
पारकर गाव जाना है
और देखना है सुन्दर सपने
कि छोड़ने हैं स्मृति पटल पर
हाशिये
कि शहर, गाव या स्कूल
और बाजार के बाद भी
याद करना है तुम्हें
एक अनिवार्य काम की तरह
सच. ! दोस्त
कितना कठिन है
तुम्हें याद करना ...

कर्मपथ

अगर गम भुलाना है तो
सबके हित का काम करो ।
पत्थर पर गुलाब खिलाना है तो
कुछ समय दूसरों के नाम करो।।1 ।।

जीवन में सुख चाहते हो तो
नेक काम बिना दाम करो ।
अंधेरों पर विजय पाना हो तो
मेहनत तुम सुबह शाम करो।। 2.।।

रोशनी बिखेरना हो चहु ओर अगर
अपनी प्यारी नींद हराम करो ।
चाहते हो 'सपना' पूरी हो तुम्हारी
कर्मपथ पर डटे रहो, न आराम करो।।3।।

आईना

हाथ बढ़ाओ जरा और सँभाल लो हमें ।
गमों के दौर से बाहर निकाल लो हमें ।।

जिन्दगी यूँ ही तमाम बीत जायेगी यहाँ ।
ऑखों में अपने ख्वाब सा पाल लो हमें ।।

वक्त की गर्दिश में गुम हो न जायें कहीं ।
वक्त रहते ही थोड़ा सा खंगाल लो हमें ।।

यूँ दूर रहकर हमसे दूरिया न बढ़ाओ ।
पास आकर तुम जरा देखभाल लो हमें ।।

कोई पत्थर के जैसा न समझो मुझको ।
नगीना समझ हाथों में डाल लो हमें ।।

देखो यहाँ रहे न कोई 'सपना' अधूरा ।
आईना हूँ देखकर जरा सँवार लो हमें ।।

हमारा सपना

देश देता हमको सब कुछ
हम भी तो अब देना सीखें ।
फूलों पर चलते थे अब तक
कांटों पर अब चलना सीखें ।।

सूरज हमको देता रोशनी
हवा देती हमें नवजीवन ।
सबका हित हो काम करें वो
कुछ तो ऐसा करना सीखें ।।

तापती गर्मी की धूप में
पेड़ हमें देते हैं छाया ।
हम तरूवर के जीवन से
परहित में कुछ करना सीखें ।।

पिछड़े हुए को आगे बढ़ायें
हम शिक्षा का दीप जलायें ।
हमारा अब हो एक ही सपना
भाव समरसता का जगाना सीखें ।।

सृजन की समीक्षा

1.

सृजक सृजन समीक्षा विशेषांक में प्रस्तुत आ अनिता मंदिलवार जी का **हार्दिक अभिनन्दन**,..

परिचय, प्रकाशन, पुरस्कार, संबद्धता, प्रसारण, मंचन, सम्मान और आत्मकथ्य, लाजवाब और प्रभावी है। स्त्री पर दबाव, दुर्बल बनाने का प्रयास आपको हमेशा से ही विचलित करता है। आक्रोश और प्रतिशोध की अग्नि आपके संवेदनशील हृदय को निरंतर प्रज्वलित करती है, जो शब्दों का रूप ले काग़ज़ पर उतरती है।

आपकी पहली रचना **ग़ज़ल**, समय के साथ, स्वार्थ पूर्ति होने के बाद बदलते हुए इन्सान, ज़मीर, चेहरे ,स्वभाव से दुखी हृदय की पीड़ा को महसूस किया है और रचना के साथ न्याय किया है।

दूसरी **ग़ज़ल**, बहुत ही खूबसूरत और आकर्षक है, हर शेर उम्दा है।

तीसरी रचना **दहलीज**, अतुकान्त रचना है, अतृप्त सपने, आकांक्षाएँ और संवेदनशील हृदय की अभिव्यक्ति, नारी के अंतर्मन से निकले लफ्ज़ हैं। बहुत खूब।

चौथी रचना **याद**, हज़ारों यादों के साथ , जीवन के रास्तों पर बढ़ते हुए भी, जो सुकून का अहसास होता है , उसे कवि मन बिल्कुल छोड़ना नहीं चाहता, क्योंकि वो यादें उसकी दिनचर्या का हिस्सा बन गई हैं और हमेशा सुखद अनुभव कराती हैं। बहुत खूब अनिता जी।

पाँचवीं रचना **कर्मपथ**, जीवन में यदि सुख की चाह है तो , परोपकार की भावना होनी चाहिए , ऐसा सुन्दर संदेश देती है यह रचना। कर्म ही पूजा है। बहुत खूब।

छठी रचना **आईना**, प्रेम से भरी खूबसूरत ग़ज़ल।

सातवीं रचना **हमारा सपना**, देश, प्रकृति, समाज के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए सार्थक सृजन है। समरसता का पाठ सिखाने का प्रयास किया है आपने इस कविता में। बहुत सुन्दर रचना।

आपकी सारी रचनाएँ बेहद संवेदनशील हृदय से निकले उद्गार हैं। आप निरंतर नई उपलब्धियाँ ,सम्मान हासिल करें। **माँ सरस्वती की कृपा बनी रहे। हार्दिक शुभकामनाएँ।**

पिंकी परुथी "अनामिका"

2.

आदरणीया अनिता जी केंद्रीय रचनाकार के रूप में आपका हार्दिक स्वागत है । आपके आत्मकथ्य की जड़ों से होकर आपकी रचनाओं की शाखाओं ने विस्तृत आकार लिया हैं..सृजन भाव के खूबसूरत फूल खिलें हैं जिनकी खुशबू फैल कर अपना कर्तव्य निर्वाह कर रही हैं ।

1.**गजल के भाव सटीक हैं** एक आक्रोश जो समयानुसार बदलने वाले रिश्तों पर तंज़ कसता है । चूंकि गज़ल है कुछ तकनीकी सुधारों की आवश्यकता है । इस गज़ल में रदीफ़ के साथ काफ़ियों की दरकार है जो ग़ज़ल की मूलभूत आवश्यकता है । विश्वास हैं आप कर लेंगीं ।

2. रेत पर ताजमहल अब न बनाओ यहाँ दोस्तों। अपना था जो अब तक 'सपना' हुआ जाता है। बहुत उम्दा अशआर , दिल की बात कहती ग़ज़ल ।

3. दहलीज़ आपके अतुकांत काव्य लिखने की क्षमता को प्रकट करता उत्कृष्ट सृजन है । काव्य जब पाठक की आँखों में चलचित्र बन जाता है तो हृदय पर प्रभाव छोड़ जाता है ।

पिंजरें की चिड़ियाँ हो या घर में परम्पराओं के पिंजरें में कैद स्त्री , एक ही भाव से दोनों असमान को तकते होंगें । सहज किंतु प्रभावी अभिव्यक्ति ।

4. तमाम कार्यकलापों के मध्य किसी की याद अपना वक़्त चुरा ही लेती है और प्रतिकूल समय में भी खिला देती है पत्थरों में लाल पलाश, बंजर

भूमि में सूरजमुखी और मरुस्थल में चला देती है ठंडी बयार । एक सुंदर अतुकांत रचना ।

5. **कर्मपथ** शीर्षक के मुताबिक़ जीवन के अनुभवों से सराबोर रचना ।

6. **आईना** वक्त की गर्दिश में गुम हो न जायें कहीं ।वक्त रहते ही थोड़ा सा खंगाल लो हमें ।बहुत खूब.. मुक़म्मल अशआर, मुक़म्मल ग़ज़ल..!

7. **हमारा सपना** , देश , समाज और पृकृति की चिंता ज़ाहिर करता सृजन । बेहतरी के संदेश के साथ लेखन का कर्तव्य निभाती हुई रचना ।

आपके आत्मकथ्य से आभास होता है कि आप स्त्री की उन्मुक्त अभिव्यक्ति पर अच्छा लिख सकती हैं और लिखा भी रही हैं । आशा हैं इसे कलम की शक्ति बनाकर आपकी रचनायें और भी परिष्कृत होकर आती रहेंगीं। **आपके उज्ज्वल भविष्य की कामनाओं के साथ पुनः बधाई।**

हेमन्त बोर्डिया

3.

आज पटल पर ,अनिता जी की रचनाएँ "सप्ताह का कवि "के रूप में संग्रहित होने के लिए मेरी हार्दिक बधाई !

यह हर्ष की बात है कि, अनेक उपलब्धियों से- अलंकृत रचनाकार की रचनाओं का हम आस्वादन कर रहें हैं ।

अनिता जी की प्रथम रचना गजल के रूप में, वे वर्तमान में
इंसान के दो मुँखौटे और बदलते आचरण को के कटु सत्य को शब्दों में बांधने का प्रयास किया है।

भावपक्ष समृद्ध है पर **गजल** की दृष्टि से मुझे कुछ कमियाँ दिखाई दी । जैसे समांत में इन्होंने प्रारंभ से अंत तक **"बदलते"** शब्द रखा है । वैसे हो सकता है गजलकार ऐसा लिखते हों इसे विद्वजन स्पष्ट करेंगे। मैंने सिर्फ इंगित ही किया है ।अन्यथा नहीं लेंवे।

अनिता जी की **दूसरी गजल** अच्छी बन पड़ी है यहाँ भी मुझे लगता है कि कुछ ब्याकरण त्रुटि हुई है कहन और भाव पक्ष बेहतरीन है।

दहलीज - वर्तमान को निहारती एक ज्वलंत प्रश्न नारी आज भी मुक्ति का मार्ग तलाश रही है चंद पँक्तियों में सारी बातें सिमटकर प्रश्नवाचक चिन्ह में बदल गई ।

याद अनेक उपमाओं से सज्जित भावपूर्ण मन को तरंगित करती रचना बधाई की पात्र हैअनिता जी!

सदभावों से भरा सदमार्ग और सत्कर्मों को प्रेरित करने का संदेशा देती **कर्मपथ** सहिष्णुता की परिचय कराती रचना है

बहुत सुंदर मर्मभावों को बाँचती बेहतरीन गजल या सजल **आईना** में दिल खोलकर रख दिया है,अनिता जी ने,"आईना हूँ जरा देखकर सँवार लो हमें" बहुत खूबसूरती से भावाभिव्यक्ति किया है।

विनिमय को प्राथमिकता देते सुंदर उपमायें प्रस्तुत करती **सपना** एक संवेदित हृदय की भाव प्रस्तुति है ।

सहज और सरल शब्दोंमें अनिता जी की सभी रचनाएँ मनभावन है विभिन्न विषयों के आयाम छूती रचनाएँ मन को बोझिल होने से बचाती है और यही किसी भी रचना कि सफलता है ।

मेरी अशेष शुभकामनायें अनिता जी लेखनी अनवरत चलती रहे ।

सुधा शर्मा राजिम

4.

अनीता जी के आत्म कथ्य और उच्चतम शिक्षा के बारे में जानकर मन प्रसन्न हो गया।।

खूबसूरत सृजन गहरे भाव के साथ हैं ।।

ग़ज़ल के पैटर्न पर थोड़े श्रम की दरक़ार है ।

और स्त्री मन की बनावट के लिए जिन संस्कारों को आप दोषी ठहरा रही हैं, मैं थोड़ा भिन्न सोचता हूँ उससे , समर्पण, प्रेम, सहयोग, कर्तव्य कहीं से कहीं तक, सत्य बोलने की राह बाधित नही करते ।

सच कड़वे होते हैं । सहज स्वीकार्य नही इसलिए कम बोले जाते हैं ।

दहलीज :- पंखों का होना भर मायने नही रखता ।
पार्श्व में हौसले भी जरूरी हैं । खूबसूरत सृजन ।
याद :- एक ठण्डी बयार के खुशनुमा एहसास का सा सृजन है ।
अन्तस् तक पैठी हुई स्मृतियाँ कहाँ 2 तक की सैर कराती हैं ।
कर्मपथ :- सतत चलते रहने और सँग साथ कुछ समय व्यतीत करने का आव्हान है। बेहतरीन तरीके से उकेरी गयी रचनाएँ हैं सभी । छठी गज़ल सुन्दर अश्आर हैं ।
हमारा सपना:- देश भक्ति से परिपूर्ण रचना है। मन आल्हादित कर गयी । संवेदना को भावों में पिरोने की कला, निश्चित ही आपको बेहद आगे तक लेकर जायेगी।
वन्दन ,अभिनन्दन और शुभकामनाएँ,....जय हो,विजय हो ।

ब्रजेश शर्मा विफल, झाँसी

5.

अनिता जी का परिचय और आत्मकथ्य मेरी इस सोच को और मजबूत करता है कि **बड़े काम बड़ी जगहों से नहीं बड़ी सोच से होते हैं।** इतनी उच्च शिक्षा, अभिनय, लेखन शिक्षण और समाज सेवा इस बात के परिचायक हैं कि **कोई महिला अगर ठान ले तो खुद ही सक्षमीकरण का ज्वलंत उदाहरण बन सकती है।**
लेखन में ग़ज़ल की तरफ रुझान अधिक दिखता है पर बारीकियों पर अभी कसावट की दरकार है। दहलीज, याद, कर्मपथ, आईना, सपना आदि हर रचना शब्द, शैली, कथ्य और भाव में बेहतरीन,शिल्प का सौंदर्य निरंतरता के साथ निखरता रहे यही शुभकामनाएँ।

डॉ. प्रीति सुराना
वारासिवनी (मप्र)

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.) हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com